

①

सहसंबंध की उपयोगिता

Date _____

Page _____

दो चरों की पारस्परिक निर्भरता को सांख्यिकीय भाषा में सहसंबंध कहते हैं। Correlation method का अन्वेषण करने का क्रेम Galton को है। Karl Pearson ने लगभग 1900 ई० में सहसंबंध ज्ञान करने की गणितीय विधि का प्रतिपादन किया। इन दोनों सांख्यिकीय विधियों ने इस विधि की सहायता से प्राणशास्त्र तथा जनन-विद्या की अनेक समस्याओं का विवेचन किया। आज सहसंबंध का प्रयोग मनो-विज्ञान तथा शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में होने लगा है।

सहसंबंध के द्वारा विभिन्न स्थितियों तथा तन्त्रों के संबंध का अध्ययन किया जाता है। इसके अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि दो चर-सांख्यिकीयों में संबंध किस दिशा में है, अर्थात् संबंध धनात्मक दिशा में है या ऋणात्मक। दूसरी ओर यह भी पता चल जाता है कि दो चर-सांख्यिकीयों में किस सीमा तक संबंध है, अर्थात् संबंध की मात्रा का भी ज्ञान हो जाता है। व्यवहार के विभिन्न पक्षों के अध्ययन से सहसंबंध के अनेक महत्वपूर्ण उपयोग हैं -

1. जब हमें व्यक्तियों के एक से अधिक शीलगुणों, योगताओं या विशेषताओं का अध्ययन करना होता है तो सहसंबंध के आधार पर ही इसका अध्ययन करना होता है। सहसंबंध के आधार पर विभिन्न योगताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा छात्रों की विभिन्न योगताओं का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।

2. सहसंबंध की जानकारी के आधार पर छात्रों का मार्गदर्शन किया जा सकता है। उचित में अर्द्ध अंक प्राप्त करने वाले को अभिजातिक की पढ़ाई की ओर तथा जीव विज्ञान में अर्द्ध करने वाले को मेडिकल की पढ़ाई की ओर प्राथमिक शिक्षक अधिक बल देते हैं। औद्योगिक मार्गदर्शन में सहसंबंध के प्रोत्साहन को अस्वीकार नहीं जा सकता है।

3. सहसंबंध के आधार पर परीक्षकों की विश्वसनीयता जात करते हैं। पुनः परीक्षण विधि द्वारा सहसंबंध का परिकलन कर विश्वसनीयता - गुणों को निकालते हैं। किसी भी परीक्षण की विश्वसनीयता - गुणों सहसंबंध पर ही आधारित है।

इस अवस्था में सहसंबंध गुणांक विश्वसनीयता गुणांक भी कहलाता है।

4. सहसंबंध के कारा मने-
 विमान तथा शिक्षा जगत में विभिन्न प्रकार के अविध्यकथन किये जाते हैं। यदि हमें दो चरों के पारस्परिक सहसंबंध की जानकारी है तो एक चर की संख्याओं के आधार पर दूसरे चर के स्वरूप के विषय में अविध्यकथन कर सकते हैं और X तथा Y चरों के बीच सहसंबंध की जानकारी रहने पर X-चर के आधार पर Y-चर के प्राप्तांकों की और Y-चर के आधार पर X-चर के प्राप्तांकों की जानकारी हो सकती है। सहसंबंध ज्ञात रहने पर विश्वास के साथ और शुद्धता से अविध्यवाणी संभव है। इसलिए प्रतिगमन और अविध्यकथन में सहसंबंध के महत्व को अस्वीकारा नहीं जा सकता है।

5. परीक्षा की वैधता ज्ञात करने के पहले सहसंबंध का परिकलन आवश्यक है। वैधता ज्ञात करने के लिए एक नवनिर्मित परीक्षा के प्राप्तांकों एवं किसी मानकीकृत परीक्षा के प्राप्तांकों के बीच सहसंबंध ज्ञात करना होता है।

सगी उस नवनिर्मित परीक्षा की वैधता जात करने के लिए हो सकती है। इस प्रकार सहसंबंध विधि के द्वारा मनोविज्ञान तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग में लाये जाने वाले परीक्षाओं की वैधता का पता लगाने में सहसंबंध गुणांक से बहुत अधिक सहायता मिलती है।

6. तत्व-विश्लेषण के लिए सहसंबंध मैट्रिक्स बनाना होता है जिसके लिए सहसंबंध - गुणांक की आवश्यकता पड़ती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं, कि तन्त्रिक विश्लेषण का आधार भी सहसंबंध है।

Dr. Om Prakash Verma
P.O. Deptt of Psychology
Maharaja College, A.R.